P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रमों का मूल्यांकन : एक अध्ययन

शान्तनु गौड़
सह आचार्य,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
भगवान महावीर कॉलेज ऑफ एजूकेशन, जगदीशपुर,
सोनीपत, हरियाणा, भारत

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा में विविधता पाई जाती है। विद्यालयीय शिक्षा की समाप्ति के पश्चात् छात्राओं के समक्ष अनेक शैक्षिक तथा व्यावसायिक पाठयक्रम होते है जिसका चयन छात्राओं को आगे के अध्ययन हेतु करना होता हैं, पाठयक्रम की अधिकता तथा उसमें विभिन्नता होने के कारण छात्राओं को उसके चयन में असुविधा होती है। कभी–कभी तो विभिन्न व्यवसायों की जानकारी के अभाव में छात्राएँ अपनी रूचि तथा योग्यता एवं क्षमता के विपरीत पाठयक्रम समायोजन नहीं कर पाती है। अतः आवश्यक है कि इण्टरमीडिएट की छात्राओं को विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की समुचित जानकारी प्रदान की जाए जिसके लिए विद्यालय स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम का क्रियान्वन किया जाये। इसके अतिरिक्त निर्देशन तथा परामर्श समिति का भी गठन किया जाना चाहिए, जो छात्राओं को विद्यालयीय शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् किन–किन पाठयक्रमों का चयन आगे के अध्ययन हेतु किया जा सकता है, इस विषय पर मार्गदर्शन प्रदान कर सकें। इसके माध्यम से छात्राओं को विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विषय में समुचित जानकारी प्राप्त हो सकेगी। सामान्यतः देखा जाता है कि जानकारी के अभाव में अधिकतर छात्राएं बी0ए0 बी0एस0सी0 जैसे पाठयक्रम का ही चयन आगे के अध्ययन हेतु करती हैं क्योंकि छात्राओं को ये विषय में जानकारी के अभाव में छात्राएँ इन पाठयक्रमों का चयन नहीं करती हैं तथा व्यावसायिक पाठयक्रम के चुनाव से वंचित रह जाती है। जिसके परिणाम स्वरूप विभिन्न व्यावसायिक कार्यक्षेत्र में उनकी भागीदारी स्वतः ही कम हो जाती है।

मुख्य शब्द : शिक्षा, शैक्षिक, व्यावसायिक, पाठयक्रम

प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ भारत में छात्राओं की शिक्षा, रोजगार में भागीदारी तथा नवीन सामाजिक परिवर्तनों के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहन देने की दिशा में सरकार और विभिन्न सुधारवादी संगठनों द्वारा तरह–तरह के प्रयास किये जा रहे हैं। केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा इस दिशा में विभिन्न प्रकार की नीतियों का निर्माण तथा आयोगो का गठन किया गया है। बालिकाओं की शिक्षा तथा रोजगार में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए समितियों का गठन किया गया। जिसने अपने सुझाव प्रस्तुत किये, इनमें राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति, हंसा मेहता समिति, महिला समाख्या, राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद् आदि प्रमुख है। जिन्होनें न सिर्फ बालिकाओं को बालकों के समान पाठयक्रम के आधार पर शिक्षा प्रदान करने की सिफारिश की हैं बल्कि रोजगार में भी समानता प्रदान करने तथा समान कार्य के लिए समान वेतन की संस्तुति की है। इन आयोगों तथा समितियों ने बालिकाओं को शिक्षण संस्थाओं तथा रोजगार में आरक्षण की सुविधा करने की संस्तुति भी दी ताकि स्त्रियों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकें तथा रोजगार के क्षेत्र में उनके प्रतिशत में वृद्धि की जा सके। इन सारे प्रयासों के बावजूद कार्यक्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अभी भी कम है। विश्व बैंक के आंगड़ों के अनुसार भारत में कार्य क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी 29 फीसदी हैं यानी भारत में हर सौ में 71 महिलाएँ ऐसी है। जो कार्यक्षेत्र में शामिल नहीं है। कार्यक्षेत्र में महिलाओं की गैर मौजूदगी की सबसे बड़ी वजह लैंगिक असमानता हैं जो देश की प्रगति को बाधित कर रही है। भारत में पुरूषवादी समाज में आज भी महिलाओं को नौकरी करने से रोका जाता हैं, पब्लिक स्पेस में महिलाओं की गैर–मौजूदगी हमारे समाज की संरचनात्मक दिक्कत बन चुकी हैं, सबसे पहले तो इसे समस्या मानना बहुत

जरूरी है। पिछले दस सालों में जितनी तेजी से नौकरियों में पुरूषों की संख्या बढ़ी हैं, अगर महिलाओं को भी उतने ही मौके मिलते तो जीडीपी रेट में करीब 1.4 प्रतिशत का इजाफा हो सकता था। भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं का शादी के बाद घर बैठ जाना बहुत बड़े स्तर पर उनकी योग्यता की बर्बादी हैं। जिस काम को एक अनस्किल्ड लेबर से कराया जा सकता हैं वही काम एक उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च पद पर बैठ चुकी महिला नौकरी छोड़कर करती हैं। भारत में कार्य क्षेत्र में महिलाओं की अनुपस्थिति आर्थिक से कहीं ज्यादा सांस्कृतिक सवाल है। सदियों से चली आ रही दकियानूसी परम्पराएँ आज भी महिला को उच्च शिक्षा तथा कार्यक्षेत्र से पीछे घसीटने के लिए जिम्मेदार है। अभी भी विभिन्न कार्यक्षेत्रों में महिलाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम हैं। भारतीय कारपोरेट जगत में महिला प्रोफेशनल्स की मौजूदगी अभी महज 6 फीसदी है तथा जूनियर मैनेजमेन्ट स्तर पर 16 फीसदी और सीनियर मैनेजमेंट स्तर पर सिर्फ 4 फीसदी है। कार्पोरेट जगत के बड़े पदों पर उनकी भागीदारी लगभग शून्य हैं। यदि हम इंजीनियरिंग एवं मेडिकल क्षेत्र की बात करें तो महिलाओं का प्रतिशत इनमें भी पुरूषों की अपेक्षा कम हैं। इसके अतिरिक्त पुरूषों के मुकाबले महिलाओं के नौकरी छोड़ने की प्रवृति औसतन दो गुनी है। एक शैक्षिक कार्य हैं, जिसमें महिलाएं सर्वाधिक मात्रा में संलग्न हैं। किन्तु उसमें भी महिलाओं का प्रतिशत उच्च शिक्षण संस्थाओं में कम है। लेक्चरर पदों पर अच्छी खासी संख्या में आने के बावजूद महिलाएँ शिखर तक नहीं पहुँच पाती है।

अतः आवश्यक है कि इस दिशा में उचित कदम उठाये जायें। रोजगार तथा व्यवसाय के क्षेत्र में इनकी भागीदारी में वृद्धि करने हेतु छात्राओं को विद्यालय स्तर पर विभिन्न व्यवसायिक पाठयक्रम की जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ इन्हें व्यावसायिक पाठयक्रम के चयन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।

समस्या कथन

'उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव : एक अध्ययन'

अध्ययन का उद्देश्य

1. सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. निजी उच्चर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. सरकारी तथा नीजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे अध्ययनरत् छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।
3. सरकारी तथा निजी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण कार्यक्रम के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पदों व संकल्पनाओं की परिभाषा

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

शिक्षा व्यवस्था को मुख्य रूप से चार अवस्थाओं में वर्गीकृत किया गया है – प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, उच्चतर माध्यमिक स्तर और उच्च शिक्षा।

वृत्तिक अभिमुखीकरण

वृत्तिक अभिमुखीकरण 'Career Orientation' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण हैं यह दो शब्दों से मिलकर बना है।

वृत्तिक (Career)

'वृत्तिक' शब्द अपने आप से बहुत से अर्थों को समाहित किये हुए है। सामान्यतः इस शब्द का प्रयोग व्यवसाय के पर्याय के रूप में किया जाता हैं। व्यावसायिक जीवन या रोजगार के सन्दर्भ में भी शब्द को स्वीकृत किया गया है।

अभिमुखीकरण (Orientation)

अभिमुखीकरण शब्द का प्रयोग स्थिति निर्धारण स्थिति निश्चयन के लिये किया जाता है। अभिमुखीकरण शब्द मनोविज्ञान के क्षेत्र से सम्बन्धित हैं जो एक परिस्थिति अथवा वातावरण से अनुकूलन निर्दिष्ट करता है। अतः संक्षेप में वृत्तिक अभिमुखीकरण से तात्पर्य एक व्यक्ति का एक रोजगार व्यावसायिक उपलब्धि के प्रति अभिविन्यरत होना है।

जागरूकता कार्यक्रम

किसी विषयवस्तु के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करने के लिए निर्मित कार्यक्रम को जागरूकता कार्यक्रम कहा जाता है। जागरूकता कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विषय से सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी को प्रदान करके प्राप्तकर्ता के वर्तमान ज्ञान में वृद्धि करना होता है।

परिसीमन

1. अध्ययन में केवल बागपत जिले के बड़ौत शहर मे स्थित विद्यालयों का चयन किया गया है।
2. अध्ययन हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सिर्फ बालिकाओ को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग यिका है। अध्ययन का उद्देश्य वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना है। अतः अध्ययन के उद्देश्य के आधार पर प्रयोगात्मक अनुसंधान के वास्तविक प्रयोग अभिकल्प के अन्तर्गत 'द्विसमूह पूर्व तथा पश्च परीक्षण' (two group pre test post test design) अभिकल्प का चयन किया गया है। जिसमें एक समूह प्रयोगात्मक तथा दूसरा नियंत्रित समूह है।

तालिका

समूह	पूर्व परीक्षण	उपचार	पश्च परीक्षण
A (प्रयोगात्मक)	✓	×	✓
B (नियंत्रित)	✓	–	✓

जिसमें A समूह प्रयोगात्मक समूह तथा B नियंत्रित समूह हैं। दोनों समूहों पर सर्वप्रथम पूर्व परीक्षण प्रशासित किया गया है उसके पश्चात् प्रयोगात्मक समूह को विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रम के आधार पर निर्मित जागरूकता कार्यक्रम प्रदान किया गया तथा नियंत्रित समूह को व्याख्यान प्रदान किया गया है तत्पश्चात् प्रयोगात्मक तथा नियंत्रित दोनों समूहों पर पश्च परीक्षण प्रशासित किया गया।

दोनों परीक्षणों में प्राप्त परिणामों को सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया है।

समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा समष्टि के रूप में उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा उसमें अध्ययनरत् छात्राओं का चयन किया गया हैं अर्थात् अध्ययन की समष्टि उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् समस्त छात्राओं का समुच्चय है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श का चयन दो स्तरों पर किया गया है –

1. विद्यालयों का चयन
2. छात्राओं का चयन

न्यादर्श के चयन हेतु सर्वप्रथम स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा 8 विद्यालयों का चयन अध्ययन हेतु किया गया। चयनित विद्यालयों में 4 सरकारी तथा 4 निजी विद्यालय हैं। विद्यालय चयन के पश्चात् शोधकर्त्री ने चयनित प्रत्येक विद्यालय से आकस्मिक प्रतिचयन विधि द्वारा 25–25 छात्राओं का चयन किया। इस प्रकार न्यादर्श हेतु कुल 200 छात्राओं का चयन किया गया।

उपकरण

अध्ययन के सन्दर्भ में सम्बन्धित प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण ज्ञात करने के लिए शोधकर्त्री ने स्वयं वृत्तिक अभिमुखीकरण मापनी का निर्माण किया है। इस मापनी के निर्माण के लिए गणित विषय के प्रश्नों को चुना गया है। अर्थात् गणित वर्ग से सम्बन्धित व्यवसायों से विभिन्न प्रश्नों का चयन किया गया है। हाईस्कूल के उपरान्त इण्टरमीडिएट में गणित विषय का चयन करने वाली छात्राओं को अपने क्षेत्र विशेष की कितनी जानकारी हैं, को ज्ञात करने के लिए इसका निर्माण किया गया हैं। हाईस्कूल करके इण्टरमीडिएट में गणित विषय का चयन करने वाली छात्राओं को मुख्य रूप से आईटीआई (ITI) , पॉलीटेक्निक, आईआईटी (IIT), यू. पी. सीटें, बी.बी.ए. (BBA), एम.बी.ए. (MBA) आदि के बारे में सामान्य जानकारी हैं या नहीं, इन व्यवसायों में सम्मिलित होने के लिए आवश्यक योग्यता एवं प्रक्रिया का उन्हें ज्ञान हैं या नहीं, यह जानने हेतु सम्बन्धित मापनी में इन्हीं क्षेत्रों से सम्बन्धित एकांशों (Item) का चयन किया गया हैं। एकांष का निर्माण करने के बाद मापनी को और अधिक वैध बनाने के लिए उनका मूल्यांकन किया गया हैं। परीक्षण के एकांश की जाँच जो दो प्रकार – प्रारम्भिक जाँच तथा वास्तविक जाँच, से की जाती हैं। प्रारम्भिक जाँच में परीक्षण की भाषा सम्बन्धी त्रुटियों तथा भ्रान्तियों को समाप्त करने का प्रयास किया जाता है। जिसके लिए विशेषज्ञों की राय ली गयी तथा वास्तविक जाँच में परीक्षण के एकांशों की कठिनाई स्तर तथा विभेदन क्षमता ज्ञात की जाती है। इसी के आधार पर उचित एकांषों का चयन किया गया है। प्रयुक्त प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के सही उत्तर पर एक अंक तथा गलत उत्तर पर शून्य अंक प्रदान किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। जिसमें तथ्यों का मध्यमान, मानक विचलन ज्ञात किया गया। तत्पश्चात् टी–टेस्ट का प्रयोग दो समूहों में अन्तर जानने हेतु किया गया हैं। मध्यमानों के मध्य अन्तर की जाँच के लिये सार्थकता स्तर 0.05 का चयन किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1, सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

तालिका–1

सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मान

क्र. सं.	सरकारी विद्यालय	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	प्रयोगात्मक समूह	50	30.6	3.8714	98	11.01	0.01 सार्थक
2.	नियंत्रित समूह	50	22.6	3.3888			

उपर्युक्त तालिका को देखकर ज्ञात होता है कि प्रयोगात्मक समूह की छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण में आये परिवर्तनों का मध्यमान 30.6 हैं जबकि नियंत्रित समूह की छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण में आये परिवर्तनों का मध्यमान 22.6 है। दोनों समूहों के वृत्तिक अभिमुखीकरण से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांकों के अन्तर की सार्थकता की जाँच टी–परीक्षण द्वारा की गयी, जिसमें टी–प्राप्तांक 11.01 प्राप्त हुआ, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं, निरस्त होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है।

2, निजी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

तालिका–2

निजी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण प्राप्ताकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टीमान

क्र. सं.	निजी विद्यालय	छात्राओं की संख्या	मध्मयान	मानक विचलन	मुक्तांश	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1. 2.	प्रयोगात्मक समूह नियंत्रित समूह	50 50	31.8 27.8	2.1381 3.0839	98	7.5732	0.05 0.01 सार्थक

उपर्युक्त तालिका को देखकर ज्ञात होता है कि प्रयोगात्मक समूह की छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण में आये परिवर्तनों का मध्यमान 31.8 है। जबकि नियंत्रित समूह की छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण में आये परिवर्तनों का मध्यमान 27.8 हैं। दोनों समूहों के वृत्तिक अभिमुखीकरण से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांकों के अन्तर की सार्थकता की जाँच टी–परीक्षण द्वारा की गयी, जिसमें टी–प्राप्तांक 7.5732 प्राप्त हुआ, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम को कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं, निरस्त होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है।

3, सरकारी तथा निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

तालिका–3

सरकारी तथा निजी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन तथा टीमान

क्र. सं.	विद्यालय	छात्राओं की संख्या	मध्मयान	मानक विचलन	मुक्तांश	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
1. 2.	प्रयोगात्मक समूह नियंत्रित समूह	50 50	29.6 31.84	2.6714 2.2165	98	4.3666	0.05 0.01 सार्थक

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का मध्मयान 29.6 हैं। इसी प्रकार निजी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं का मध्यमान 31.84 हैं। दोनों समूह की छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव से सम्बन्धित मध्यमान प्राप्तांको के अन्तर की सार्थकता की जाँच टी–परीक्षण द्वारा की गयी, जिसमें टी–प्राप्तांक 4.3666 पाया गया है, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि सरकारी तथा निजी विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं, निरस्त होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि सरकारी तथा निजी विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव में अन्तर है। निजी विद्यालयों की छात्राओं पर जागरूकता कार्यक्रम अधिक प्रभावशाली रहा तथा निजी विद्यालय की छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण के प्रति जागरूकता स्तर में अधिक परिवर्तन हुआ है।

निष्कर्ष

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने पर पाया गया है कि जागरूकता कार्यक्रम वृत्तिक अभिमुखीकरण को प्रभावित करता है। यदि छात्राओं को प्रति रूचि एवं व्यावसायिक भिज्ञता निश्चित रूप से बढ़ेगी तथा छात्राएँ परम्परागत पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अध्ययन में भी रूचि लेगी। इसके अतिरिक्त अध्ययन में सरकारी तथा निजी विद्यालय की छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण स्तर पर मध्यमान 31.84 प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सरकारी विद्यालय की छात्राओं की अपेक्षा निजी विद्यालय की छात्राओं पर जागरूकता कार्यक्रम अधिक प्रभावशाली रहा। जो निजी विद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम के क्रियान्वयन की उचित व्यवस्था थी।

शैक्षिक निहितार्थ

प्राप्त परिणाम इंगित कर रहे हैं कि छात्राओं के वृत्तिक अभिमुखीकरण पर जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है इन प्रभावों को दृष्टिगत रखते हुए कहा जा सकता है कि विद्यालय में छात्राओं को विभिन्न व्यवसायिक पाठ्यक्रम के विषय में जानकारी प्रदान की जानी चाहिए ताकि छात्राएँ रूचि एवं क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम का चयन कर सकें। छात्राओं को आई.टी.आई. पॉलीटेक्निक, आई.टी.आई. आदि के विषय में पूर्ण जानकारी नहीं होने के परिणाम स्वरूप उन्हें कठिन लगते हैं, जिसके कारण छात्राएँ परम्परागत पाठ्यक्रम का चुनाव अधिक करती है। विद्यालय में व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विषय में निर्देशन प्रदान करने के फलस्वरूप छात्राओं में इन पाठ्यक्रमों के प्रति रूझान में वृद्धि होगी।

अभिभावकों को भी चाहिए कि वे छात्राओं को विभिन्न व्यावसायिक पाठयक्रमों के विषय में जानकार प्रदान करें, तथा व्यावसायिक पाठयक्रम के चयन हेतु

प्रोत्साहन प्रदान करें। इसके अतिरिक्त अभिभावकों को अपनी रूचि अथवा इच्छा के अनुसार छात्राओं को पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं दिलवाना चाहिए। बल्कि छात्राओं की रूचि व व्यवसायगत झुकाव को देखते हुए उनको वास्तविक लक्ष्यों को निर्धारित करने में सहयोग प्रदान करना चाहिए।

राज्य सरकार का भी यह दायित्व हैं कि वह प्रादेशिक स्तर पर श्रेष्ठ वातावरण एवम् अध्ययन–अध्यापन से युक्त विद्यालयों की स्थापना करें। इन विद्यालय में छात्राओं को पर्याप्त शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन देने हेतु अलग से प्रकोष्ठ निर्मित किया जाना चाहिए जिसका संचालन प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा किय जाना चाहिए। व्यवसायिक निर्देशन के माध्यम से छात्राएँ अपनी रूचि एवं क्षमता के आधार पर व्यवसायिक पाठ्यक्रमों का चयन कर सकेगी। छात्राओं को विद्यालय में विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित प्रशिक्षण संस्थाओं, छात्रवृति व शैक्षिक ऋण आदि की जानकारी प्रदान करने की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त विद्यालय प्रशासन को छात्राओं को विभिन्न प्रशिक्षण, संस्थाओं, तथा केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं से अवगत कराना चाहिए।

इन सब प्रयासों के फलस्वरूप ही विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में छात्राओं की उपस्थिति में वृद्धि की जा सकती है जिसके परिणाम स्वरूप कार्यक्षेत्र तथा रोजगार के क्षेत्र में उपस्थिति दर्ज करा कर छात्राएँ समाज एवं देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Best & Kahn (2011) Research in Education, New Delhi: Prentice Hall India Pvt. Ltd.

गुप्ता एस0पी0, अल्का (2010) सांख्यिकीय विधियां, इलाहाबाद : साहित्य भवन, पब्लिकेशन

शर्मा पूर्णिमा (2016) 'वर्कफोर्स में महिलाओं की भागीदारी, लखनऊ : नवभारत टाइम्स, 23 मई, 2016

बुच.एम.बी (सम्पादित) (1983–89), फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन (वॉल्यूम 1 व 2), नई दिल्ली एन. सी.इ.आर.टी.।

राव एवं सिन्हा, (1983), फीमेल एजूकेशन एण्ड एचीवमेन्ट इन हायर एजूकेशन, जर्नल आफ हायर एजूकेशन दिल्ली।

एनुवल रिपोर्ट–यूजीसी (2013)

एनुवल रिपोर्ट–2012–14 डिपार्टमेंट, ऑफ स्कूल एजुकेशन एण्ड लिटरेसी, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन एनएचआर, की गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।